माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

O

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी

केन्द्र क्रमांक की सील: 531036

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 5 1 परीक्षा का विषय हिन्दी (सामान्य)

2. परीक्षा का माध्यम English परीक्षा की दिनांक 20/3/2009.

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2002, सेट: —

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

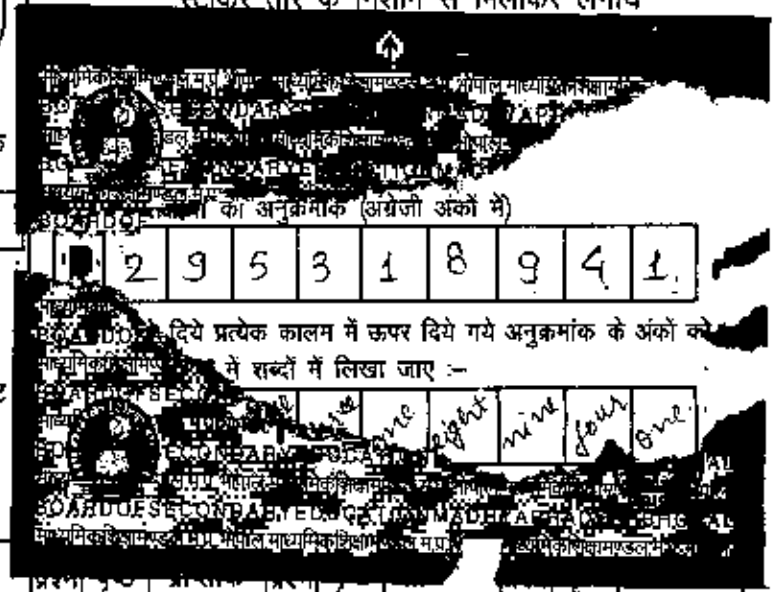

[redacted]

का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	5	3	1	8	9	4	1

दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को ... में शब्दों में लिखा जाए :-

[redacted]

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में ✗ अंकों में

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 9. में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ____

नाम ____ पद ____

पता/संस्था ____

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1	3		11	10		21	18, 19, 20, 21	
2	3		12	11		22		
3	3		13	11		23		
4	4		14	12		24		
5	4,5		15	12, 13		25		
6	5		16	14		26		
7	6		17	15		27		
8	7		18	16		28		
9	8		19	16		29		
10	9,10		20	17		30		

कुल प्राप्तांक — शब्दों में — अंकों में

होलोक्राफ्ट स्टीकर

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों ... का मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) ____ हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक ____ दिनांक.............. दिनांक..............

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

'प्रश्न क्र. 1'

उत्तर:-

i) कृष्ण

ii) गुलाबराय

iii) बात ही लड़ी

iv) विवेकी

v) आठ

'प्रश्न क्र. 2'

उत्तर:-

i) जब अपके पर जलमग्न हो गया।

ii) ईश्वर की ओर।

iii) उर्मा।

iv) गोपाल सिंह 'नेपाली'।

v) कर्णाचार्य।

'प्रश्न क्र. 3'

उत्तर:-

i) सत्य।

ii) सत्य।

iii) असत्य।

iv) असत्य।

v) असत्य।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

4

यो + पृ = कुल अंक

'प्रश्न क्र- 4'

उत्तर:-

i) यशोधरा ने वसन्त को कहा है → सिद्धार्थ को।

ii) कन्याकुमारी नाम पड़ा है → पार्वती के नाम पर।

iii) अमीरी की तुलना में गरीबी ज्यादा सुखद है → महात्मा गांधी।

भ्रुन → कमल

सारले → पृथ्वी और अग्नि।

B
S
E
M
P

'प्रश्न क्र- 5'

उत्तर:-

i)

→ वर्षा न होने के कारण त्राहि-त्राहि मची हुई थी।

ii)

→ सिरचन मानू को अपने द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को मानू को भेंट देने के लिए रेलवे स्टेशन गया था।

iii)

→ बिन पानी के मोती, मानुष और चून महत्वहीन हो जाते हैं।

पृष्ठ के अंकों का य

On next Page.

5 + = कुल

BSEMP

iv)

→ यशोधरा सिद्धार्थ की पत्नी थी।

v)

→ हंसिनी ने राज काज प्रजा को सौंपने का सुझाव दिया।

'प्रश्न क्रं० 6'

उत्तर:-

'सूरदास जी' ने अपने काव्य 'सूर के बालकृष्ण' में भगवान श्री कृष्ण की बाल लिलाओं का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया हैं। उन्होंने अपने काव्य में माता यशोदा के मातृभाव को बड़े ही सहज तरीके से अपने शब्दों में पिरोया हैं। एक बार माता यशोदा ने देवकी को यह संदेश भेजा कि आप तो कृष्ण की जन्मदात्री हो। मैं तो केवल उसकी धाय हूँ। आप तो कृष्ण की सभी आदतों से भली भाँति परिचित हो, पर फिर भी मैं कृष्ण के स्वभाव के बारे में आपको कुछ बताना चाहती हूँ। मेरे लाड़ले कृष्ण को प्रातः काल कलेवा में माखन रोटी खाना प्रिय हैं। वे स्नान करने से घबराते हैं। तेल, उबटन, गरम पानी, आदि स्नान की वस्तुएँ देखकर वे भाग जाते हैं। फिर उनकी सभी इच्छाओं को क्रम से पूरा करने पर ही वह स्नान के लिए तैयार होते हैं। वे संकोची स्वभाव के हैं। वे अपने मन की बात सभी को नहीं कह पाते। उनकी इसी आदत की वजह से मेरा मन सदैव चिन्ताग्रस्त रहता हैं।

इस तरह, यशोदा ने देवकी को कृष्ण के स्वभाव के बारे में संदेश भेजा।

पृष्ठ के अं

प्रश्न क्रं. 7

उत्तर:-

महाकवि 'भूषण' ने अपने काव्य 'शौर्य गाथा' में युद्ध भूमि, अस्त्र-शस्त्र, योद्धाओं, आदि का बहुत ही सजीव चित्रण किया हैं। उन्होंने उपमा अलंकार का उपयोग बड़ी ही सहजता से किया हैं। उन्होंने महराजा छत्रसाल की और उनकी बरछी का बहुत ही प्रशंसनीय चित्र प्रस्तुत किया हैं। उन्होंने महाराजा छत्रसाल की बरछी की निम्न विशेषताएँ बताई हैं। उन्होंने कहा हैं कि वह बरछी सदैव महराजा छत्रसाल के साथ रहती थी। वह दुश्मनों के अंगो को छिन्न भिन्न कर देती थी। जिस प्रकार एक मछली समुद्र की तीव्र गति को पार कर लेती हैं, कि उसी प्रकार वह बरछी विपक्षी योद्धाओं के कवचों को आसानी से पार कर उन्हें मौत के घाट उतार देती थी। वो विपक्षी योद्धाओं का सम्पूर्ण बल-पौरुष छीनकर उन्हें बलहीन कर देती थी। वह विपक्षी सेना के बड़े-बड़े बड़े झुण्डों का नाश कर देती थी।

इस तरह कवि भूषण ने महराजा छत्रसाल की बरछी की यह विशेषताएँ बताई हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

On Nex Page

'प्रश्न क्र. 8'

उत्तर:-

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भारत की के अतीत और वर्तमान की उपलब्धियों को अपने निबन्ध 'मेरे सपनों का भारत' में बहुत ही सरलता, सहजता व स्पष्टता के साथ अपने शब्दों में पिरोया है। उन्होंने आर्यभट्ट की बात करते हुए, उनकी (आर्यभट्ट की) खोजों व आविष्कारों को खूब सराहा है। उन्होंने आर्यभट्ट की 'देन' बताई है। आर्यभट्ट ने 'शून्य' का आविष्कार किया था, जिसने गणना की दोहरी प्रणाली की आधारशिला रखी, जिस पर वर्तमान कम्प्यूटर आधारित है। अलबर्ट आइन्सटाइन ने कहा था कि "हम भारतीयों के शुक्रगुजार हैं जिन्होंने हमें गणना करना सिखाया, जिसके बिना कोई महत्वपूर्ण खोज नहीं की जा सकती थी।" आर्यभट्ट ने 'कापरनिकस' से एक हजार वर्ष पहले बता दिया था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।

इस तरह, आर्यभट्ट ने विश्व को कई महान देन दी व कई महत्वपूर्ण आविष्कार व खोज की, जो कि आगे चलकर विश्व इतिहास में हुई महत्वपूर्ण खोजों का आधार बनी व ~~प्रश्न क्र.~~ विश्व में 'भारत' के नाम को गगनचुम्बी गौरव व सम्मान दिलाया।

P.T.O.

यो

'प्रश्न क्रं. 9'

उत्तर :-

सुभद्रा कुमारी चौहान ' हिन्दी साहित्य के इतिहास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण और जाना-माना नाम हैं। उन्होंने अपने कार्य 'तीन बच्चे' {कहानी} में सभी पात्रों, उनकी मासूमियत व उनके चरित्र को बखूबी बताया हैं।

उन्होंने कहानी के प्रमुख पात्र तीन गरीब बच्चों की दशा को इस प्रकार बताया हैं। वे तीनों बच्चे अत्यन्त गरीब थे। उनके माता-पिता के जेल में होने के कारण, उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं था। वे तीनों गाना गाकर भीख माँगते थे। उनके पास न तो पहनने के लिए ठिक कपड़े थे और ना ही सर छुपाने के लिए घर। वे तीनों दिन भर भीख माँगते और रात को पुल के नीचे जाकर सो जाते। ऐसा प्रतित होता था कि वे कई दिनों से नहाएँ ना हो। उनके शरीर पर मेल की एक तह भी जम गई थी व उनके भी भीखरे व सूखे थे। इन तीनों बच्चों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। वे किसी तरह भीख माँगकर अपना जीवन गुजर-बसर कर रहे थे।

इस तरह लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान ने उन तीनों गरीब बच्चों की दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया।

BSEMP

'प्रश्न क्र. 10'

उत्तर:-

श्री 'देवेन्द्र दीपक' ने अपने निबन्ध 'पुस्तक' में नालन्दा विश्वविद्यालय की अनेक विशेषताएँ बड़े ही सहज तरीके से बतलाई हैं। वे निम्न हैं:-

अतीत में इस विश्वविद्यालय का शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा दबदबा था

यह भारत देश का सबसे बड़ा शिक्षा केन्द्र था।

यहाँ लगभग दस हजार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे।

यहाँ पन्द्रह सौ से अधिक आचार्य अध्यापन का कार्य करते थे।

यहाँ पर दर्शनशास्त्र, नैतिकशास्त्र, हेतु विद्या, निरुक्त, न्याय शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, आदि कई विषयों के शिक्षण की व्यवस्था थी।

यहाँ पर आचार्य शीलभद्र, नागार्जुन, आचार्य ज्ञान श्री, आचार्य बुद्ध भद्र, आचार्य स्थिरमति, आचार्य गुणमति व आचार्य सागरमति जैसे कई प्रख्यात आचार्य थे।

यहाँ पर रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक नामक तीन पुस्तकालय थे, जिनमें रत्नसागर का भवन नौमंजिला था।

लेखक ने नालन्दा विश्व विद्यालय की यह विशेषताएँ

बताई हैं जो कि इस विश्वविद्यालय को दुनिया के श्रेष्ठतम् विश्वविद्यालयों में से एक बनाता हैं।

'प्रश्न क्र. 11'

उत्तर:-

कवि सुदर्शन 'प्रियदर्शिनी' ने अपनी कविता "हम बढ़ा जा रहे हैं ...." में बहुत ही स्पष्ट रूप से पाश्चात्य संस्कृति के भारतीय संस्कृति पर बढ़ते नकारात्मक प्रभाव को बताया हैं।

'वस्तुकला', सत्वज्ञान' व 'योग' सब हमारी भारतीय संस्कृति की देन हैं जिसे विदेशी लोग अपना बताकर 'फेंगचुई', 'रेकी' और 'योगा' के रूप में प्रचारित कर रहे हैं। वे हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता की उपलब्धियों को अपना बताकर हमें ही सिखा रहे हैं और हम अपनी ही विद्याओं को विदेशी स्वरूप में अपनाकर आधुनिक होने की दुंदभी बजा रहे हैं। हम अपनी संस्कृति की जड़ो को खोखला बना रहे हैं। और विदेशी लोग हमारी संस्कृति को चुराकर हमें ही सिखा रहे हैं। आज ना धर्म अपना हैं, ना कर्म अपना, पहनावा और विधि विधान भी अपने नहीं रहे।

लेखक ने विदेशियों द्वारा हमारी उपलब्धियों को अपना कहकर प्रचारित करने के सन्दर्भ में "उल्टे बाँस बरेली को" कहा हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

'प्रश्न क्र. 12' Q.N 12

उत्तर :-

'द्विवेदी युग' (1900 - 1920)

'द्विवेदी युग' भारतेन्दु युग के बाद शुरू हुआ। इस युग का नाम पं महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर पड़ा। 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन कर इन्होंने गद्य प्रकाशन को स्थायित्व प्रदान किया। इस युग के प्रमुख निबंधकार थे :-

निबन्धकार	रचनाएँ
i) पं महावीर प्रसाद द्विवेदी	साहित्य लहरी, साहित्य तर्किक।
ii) अध्यापक पूर्ण सिंह	सच्ची वीरता, मजदूरी और प्रेम

'प्रश्न क्र. 13' (अ)

:-

फूट-फूट कर रोना → अत्यन्त दुःख प्रकट करना।

:- पिताजी की मृत्यु होने पर गीता फूट-फूट कर रोने लगी।

ग) हँसी खेल न होना → मजाक या आसान बात न होना।

वाक्य :- लोक सेवा आयोग की परिक्षा में उत्तीर्ण होना हँसी खेल नहीं है।

प्रश्न क्र. 13 (ब)

उत्तर :-

क) → पुस्तक ~~सुधा~~ चुराई जाती है।

ग) → मीरा सुन्दर लड़की है।

मध्यप्रदेश

'प्रश्न क्र॰ 14 (अ)'

उत्तर:-

ख) सुत → राम दशरथ राजा के सुत थे।

सूत → अनाज के बोरे पक्के सूत के बने होते हैं।

ग) जाति → केवट निचली जाती का आदमी था।

जाती → राधा रोज सुबह विद्यालय जाती हैं।

'प्रश्न क्र॰ 14 (ब)'

उत्तर:-

क)

→ आप चुप रहो।

ग)

→ तुम परिश्रम करके परिक्षा में सफल हो जाओ।

'प्रश्न क्र॰ 15'

उत्तर:-

"आशा से आकाश थमा हैं"

यह पंक्ति यह बात सिद्ध करती हैं कि हमें हमेशा आशावादी रहना चाहिए। हमें कभी भी निराशावादी नहीं होना चाहिए। आशावादी मनुष्य जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करते हैं। हमें हमेशा आशावादी होते हुए, सकारात्मकता के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ते

BSEMP

पृष्ठ के

रहना चाहिए और किसी मुसीबत या संकट के आने पर निराश नहीं होना चाहिए। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण हैं 'एम. नारायणमूर्ति' जिन्होंने मात्र 5000 रु. से अपना व्यापार शुरू किया था और आज वे भारत की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कम्पनी 'इन्फोसिस' की अध्यक्षता कर रहे हैं और विश्व में भारत का नाम गौरवान्वित कर रहें हैं।

इस कड़ी में अगला उदाहरण हैं डॉ. एपी.जे. अब्दुल कलाम' का जो कि एक गरीब नाविक के घर में जन्में हैं और एक वक्त था जब उनको अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए गली-मोहल्लों में अखबार बेचना पड़ते थे। किन्तु उन्होंने अपनी आशावादी सोच को बरकरार रखते हुए भारत का राष्ट्रपति बनने तक का सफर तय किया।

'धीरू भाई अम्बानी', 'अमिताभ बच्चन', 'नरेन्द्र मोदी', 'बिल गेट्स', 'महेन्द्रसिंह धोनी' आदि कई लोग अपने आशावादी दृष्टिकोण, अपार मेहनत और सकारात्मक सोच द्वारा जीवन में अद्वितीय सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

इसी कारण हमें भी जीवन में सदैव 'आशा' को बरकरार रखना चाहिए व सकारात्मक सोच के साथ, निराशा को दूर कर अपने लक्ष्य तक पहुँचने की हर संभव कोशिश करना चाहिए। सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

"To be Succesful, Be Positive, do hard work"

BSEMP

'प्रश्न क्र. 16'

उत्तर:-

संदर्भ:- यह गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक मल्हार के पाठ 'मेरे सपनों का भारत' से लिया गया है। इसके लेखक पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम हैं।

प्रसंग:- इन पंक्तियों में लेखक ने भारत के विकसित देश बनने से सम्बन्धित समस्याओं व उनके निराकरण को बतलाया है।

व्याख्या:- लेखक अगले बीस (२०) वर्षों में भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। उनके मत में आज विश्व एक बुद्धिजिवि समाज के रूप में परिवर्तित हो रहा है। भारत भी अपनी शक्तियों, कमजोरियों व प्रतिस्पर्धात्मक स्तर को पहचानें व एक बौद्धिक समाज के रूप में विकसित हो।

विशेष:-

- लेखक ने बहुत ही तर्कपूर्ण भाषा का उपयोग किया है।
- लेखक बड़ी ही सहजता, सरलता और सजीवता के साथ अपनी बात कही है।

BSEMP

"प्रश्न क्र॰ 17"

उत्तरः-

संदर्भः- यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक की कविता 'हिमालय और हम' से ली गई हैं, जिसके रचियता गोपाल सिंह 'नेपाली' हैं।

प्रसंगः- कवि ने हिमालय और भारतीयों के समान गुण व गंगा की महत्ता बताई हैं।

व्याख्याः- लेखक कहते हैं जिस प्रकार हिमालय अटल, अडिग और अविचल हैं, ठिक उसी प्रकार भारतवासी भी दृढ़ निश्चयी व स्वाभिमानी हैं। हमें कोई ललकार नहीं सकता। हम कभी हिंसा से नहीं हारे हैं और हमारा मुख्य अस्त्र अहिंसा हैं। हिमालय से निकलने वाली पवित्र गंगा नदी का जल जो पी ले उसके सारे दुःख-पाप मिट जाते हैं और वह सदैव प्रसन्न रहता हैं। भारत और हिमालय का नाता अटूट हैं।

विशेषः- # लेखक ने हिमालय के गुणों को बहुत ही सुन्दर चित्रण किया हैं।
बहुत ही असरदार और शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया गया हैं।

'प्रश्न क्र. 18'

उत्तर:-

क)

→ कवि ने प्रकृति का चित्रण करके बदलते ~~का~~ ऋतुओं के प्रभाव को बताया हैं। फल-फूल सब पनप चुके हैं। हरियाली छा गई हैं। मयूर वन में नाच कर खुशी का इजहार कर रहा हैं। और आसमान में मनमोहक घनघोर घटाएँ छा गई हैं।

ख)

→ उक्त पंक्तियों में 'बसन्त' ऋतु का वर्णन हुआ हैं।

ग)

→ 'बसन्त ऋतु' → ~~शीर्षक~~ शीर्षक।

'प्रश्न क्र. 19'

उत्तर:-

क)

→ शीर्षक → 'राष्ट्रीय चरित्र'।

ख)

→ क्रियान्वयन → ~~स्थापना और कार्य~~ लागू करना।

राष्ट्रिय चरित्र → राष्ट्रवासियों का आचरण।

ग) → राष्ट्रीय चरित्र प्रजातन्त्र की आत्मा हैं। इसके बिना प्रजातंत्र सफलता नहीं पा सकता। राष्ट्रीय चरित्र जितना अच्छा होगा उतना ही देश का विकास होगा, गौरव बढ़ेगा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों -

(17) योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 17 के अंक | = कुल अंक

मध्यप्रदेश

'प्रश्न क्र.२०'

उत्तर:-

डी-९० सुदामा नगर,
इन्दौर (म.प्र.).
23/02/2009.

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम। मैं यहाँ कुशल मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ खुश व कुशल मंगल होंगे। मेरी वार्षिक परिक्षाएँ नजदीक आ रही हैं। बोर्ड की परिक्षा होने के कारण मैं अधिक मेहनत कर रहा हूँ। मैं प्रतिदिन 8-9 घण्टों तक पढ़ाई कर रहा हूँ। मुझे केवल 'गणित' ~~विषय~~ विषय मे थोड़ी मुश्किल हो रही हैं, जिसे दूर करने के लिए मैंने कोचिंग ~~क्लास~~ लगवा ली हैं। मुझे पूर्ण उम्मीद हैं कि मैं इस वर्ष भी अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करूँगा और बोर्ड की मेरिट लिस्ट में भी आऊँगा।

माताजी को प्रणाम और नीतू व दिव्या को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
अ.ब.स.

पृष्ठ के अंक

P.T.O.

BSEMP

BSEMP

प्रश्न क्र॰ 21

उत्तर :-

'निबन्ध'

'आतंकवाद'

रूपरेखा :-

i) प्रस्तावना ।
ii) आतंकवादी गतिविधियाँ ।
iii) आतंकवादी संगठन व उनके लक्ष्य ।
iv) आतंकवाद के प्रकार ।
[illegible]
vi) उपसंहार ।

प्रस्तावना :-

देश के कारोबार को नेस्तोनाबूत करने का नाम हैं आतंकवाद ।

हर शहर, गाँव, गली मोहल्ले में दहशत का पैगाम हैं आतंकवाद ।

प्रजातंत्र के स्तंभो को हिला के रखने वाला विध्वन्सक काम हैं आतंकवाद ।

विश्व की अमन, शांति व चैन को मिटाने का इंतजाम हैं आतंकवाद ।

और ऐसा आतंकवाद आज के समय में हर अखबार और न्यूज चेनलों की प्रमुख खबर बना हुआ हैं । आतंकवादी गतिविधियाँ दिन-पे-दिन

पृष्ठ के अंकों का योग

बढ़ती जा रही हैं और यह आज के समय की सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभर रही हैं आज यह समस्या सम्पूर्ण विश्व में विकराल रूप धारण करती जा रही हैं।

आतंकवादी गतिविधियाँ :-

आतंकवादी गतिविधियाँ दिन-पे-दिन बढ़ती जा रही हैं। मुम्बई के लोकल ट्रेन में या ताज होटल में हुए बम ब्लास्ट, वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हुआ हमला, श्रीलंका की क्रिकेट टीम पर हमला, दिल्ली में संसद पर हमला, गोधरा कांड, अक्षर धाम पर हमला, आदि ये सब आतंकवादी गतिविधियों के उदाहरण हैं। ये आतंकी गतिविधियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। रोज किसी ना किसी आतंकवादी गतिविधि के बारे में अखबार में पढ़ने में या टी.वी. में देखने को मिल ही जाता है कभी कहीं पर बम ब्लास्ट, तो कभी किसी बड़े नेता या अभिनेता का अपहरण। कभी किसी टैंक अथवा अन्य जल स्त्रोत में जहर मिलाना, तो कभी रेलवे सिस्टम की फिश प्लेट निकालकर रेल दुर्घटना कराना। ये सभी आतंकवादी घटनाओं के उदाहरण हैं। आज कोई भी व्यक्ति, कहीं भी, और कभी भी सुरक्षित नहीं है।

आतंकवादी संगठन और उनके लक्ष्य :-

अल कायदा, तमिल टाइगर्स, इंडियन मुजाहिदीन, लिट्टे, आदि कई खतरनाक और विशाल

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

आतंकवादी संगठन तालिबान, ओसामा बिन लादेन आदि के नेतृत्व में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिषदों का ध्यान अपनी ओर खींच कर और अपनी अनैतिक माँगो को पूरा करने के लिए विश्व आतंकवाद को फैला रहे हैं।

आतंकवाद के प्रकार :-

आतंकवाद दो प्रकार का होता है:-

i) सकारात्मक आतंकवाद, और
ii) नकारात्मक आतंकवाद।

सकारात्मक आतंकवाद वो था जो चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत को आजादी दिलाने के लिए अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ किया था।

और नकारात्मक आतंकवाद वो है जो तालिबान, अलकायदा आदि आतंकवादी संगठन आज फैला रहे हैं। इसमे लाखो मासूमों की जाने जाती हैं। कई महिला व बच्चे मौत के घाट उतर जाते हैं। इन आतंकवादी हमलों का लक्ष्य अनैतिक होता है। और इनसे अमन, चैन व शांति नष्ट होती है। आज विश्व में यही आतंकवाद अपनी जड़े फैला रहा है। और दहशत और डर का कारण बनता जा रहा है।

उपसंहार :-

आतंकवाद का प्रमुख कारण हमारे देश व अन्य देशों के भ्रमित और गलत राह पर चले रहे युवा हैं जिन्हें कि देश व धर्म के नाम पर उकसा व आतंकवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। आज जरूरत इस बात की है कि हम केवल सुरक्षा इन्तजामों को ही पुख्ता ना करें बल्कि इस समस्या को जड़ मूल से नष्ट करने के लिए युवाओं को अच्छी शिक्षा दें। हमें आतंकवाद को जड़ मूल से नष्ट करना होगा व देश विश्व में समाज में धर्म, अमन, शांति, चैन सुकून को वापस लाना होगा।

"आज उठा दो सब दुकानें यहाँ से काले धन्धों की,
दाल न हरगिज गलने देना इन स्वार्थ के अंधों की।
उसे कहना यह धरती है आजादी के बन्दों की,
भगत सिंह के इस भारत में जगह नहीं जयचन्दों की।
नहीं चलेगा काम साथियों, केवल जयजय कारों से,
संभल के रहना अपने घर में छुपे हुए गद्दारों से

इसी भावना के साथ आओ हम प्रण ले कि हम आतंकवाद को मिटाने की हर संभव कोशिश करेंगे।

जय हिन्द।

जय भारत।

वन्दे मातरम्।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

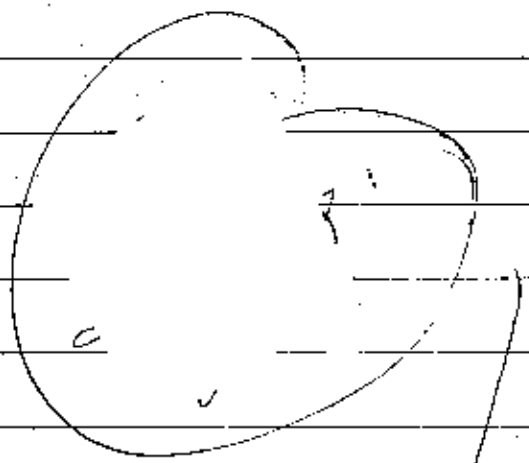

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

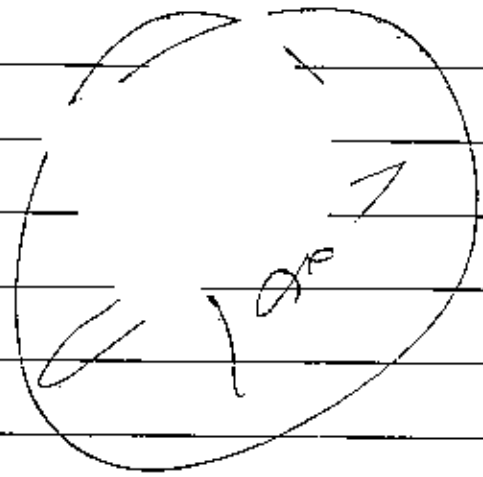

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग